[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : माननीय प्रधानमंत्री एक वक्तव्य देंगे।

**प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा**: महोदय, श्री लालकृष्ण आडवानी कुछ कहना चाहेंगे।

**अध्यक्ष महोदय** : उनके वक्तव्य के बाद मैं उन्हें अनुमति दूंगा।

*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

**श्री मोहन रावले** (मुम्बई दक्षिण-मध्य) : अध्यक्ष महोदय, मैं प्रधानमंत्री जी से स्पष्टीकरण चाहता हूं कि पाकिस्तान के राष्ट्रपति जिस विमान में हिन्दुस्तान आए थे, उसमें भारत का तिरंगा झंडा उल्टा लगा हुआ था। *(व्यवधान)*

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : कुछ भी कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

[हिन्दी]

**श्री मोहन रावले** : उस विमान में दो झंडे थे। एक भारत का झंडा था और दूसरा पाकिस्तान का झंडा था। भारत के झंडे में हरा रंग ऊपर था और केसरी रंग नीचे था। *(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय** : इसके बाद मैं आपकी बात पर ध्यान दूंगा। प्रधानमंत्री जी के वक्तव्य के अलावा कुछ भी कार्यवाही-वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाएगा।

*(व्यवधान)**

**अध्यक्ष महोदय** : कृपया सबके प्रति शिष्टाचार दिखाइये। हमें प्रधानमंत्री जी को सुनने का अधिकार है। जो बोलना है आप बाद में बोलिये। मैं श्री गीते को बाद में मौका दूंगा।

*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय** : हमें कुछ सूचनाएं प्राप्त हुई हैं।

मैं आपको समय दूंगा। इस बात पर सहमति है कि प्रधानमंत्री जी एक वक्तव्य देंगे। मैं आपको बाद में मौका दूंगा।

*(व्यवधान)*

[हिन्दी]

**श्री मोहन रावले** : माननीय प्रधानमंत्री जी को इस बारे में बताना चाहिए। *(व्यवधान)*

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

[अनुवाद]

**अध्यक्ष महोदय** : कृपया हम लोग ऐसा न करें। कृपया सहयोग कीजिए। आप बहुत ही वरिष्ठ और निष्ठावान सदस्य हैं। हम प्रधानमंत्री के प्रति सम्मान रखें। यह बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है।

**अपराह्न 12.03 बजे**

## प्रधानमंत्री द्वारा वक्तव्य*

### चीन के प्रधानमंत्री तथा पाकिस्तान के राष्ट्रपति की हाल की भारत यात्रा

[अनुवाद]

**प्रधानमंत्री (डा० मनमोहन सिंह)** : अध्यक्ष महोदय, मैं माननीय सदस्यों को पिछले कुछ सप्ताहों में हमारे देश के दो महत्वपूर्ण दौरों के सम्बंध में अवगत कराना चाहता हूं।

चीन के प्रधानमंत्री श्री वेन जिआबाओ ने दिनांक 9 से 12 अप्रैल, 2005 तक भारत का राजकीय दौरा किया। इस दौरे के नतीजे महत्वपूर्ण रहे। प्रधानमंत्री श्री वेन ने स्वयं भी इसे 'ऐतिहासिक' बताया।

11 अप्रैल को चीन के प्रधानमंत्री के साथ मेरी मुलाकात काफी गर्मजोशी के साथ हुई और उपयोगी रही। हमने एक संयुक्त वक्तव्य पर हस्ताक्षर किए जिसमें भारत-चीन सम्बंधों की दिशा तथा द्विपक्षीय क्षेत्रीय तथा वैश्विक स्तरों पर सहयोग की एक कार्य-योजना का उल्लेख है। संयुक्त वक्तव्य की एक प्रति सदन के पटल पर रखी है। ग्यारह अन्य समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए और व्यापक व्यापार तथा आर्थिक सहयोग पर भारत-चीन संयुक्त अध्ययन दल की रिपोर्ट जारी की गई। जिन विभिन्न समझौतों पर हस्ताक्षर किए गए उनमें हाल के वर्षों में चीन के साथ हमारे सम्बंधों में हुई तीव्र प्रगति परिलक्षित होती है। प्रधानमंत्री श्री वेन तथा मैं इस बात पर सहमत थे कि भारत चीन सम्बन्धों ने व्यापक विकास के एक नए चरण में प्रवेश कर लिया है।

संयुक्त वक्तव्य में हम "शान्ति और समृद्धि के लिए एक रणनीति तथा सहयोगपूर्ण साझीदारी" स्थापित करने पर सहमत हुए हैं। यह हमारे बीच इस आम सहमति का द्योतक है कि भारत और चीन के रिश्ते द्विपक्षीय मुद्दों से आगे बढ़ गए हैं और **अब इन्होंने एक वैश्विक और स्ट्रेटेजिक स्वरूप प्राप्त कर लिया है।** इस साझीदारी में **लम्बित मतभेदों को आगे बढ़कर सुलझाने और लगातार सुधर रहे सम्बंधों के मार्ग में इन्हें न आने देने की हमारी इच्छा** परिलक्षित होती है। इसका स्वरूप कोई सैनिक संधि अथवा गठबंधन का नहीं है, बल्कि इसमें विश्व की घटनाओं के प्रति एक सामूहिक दृष्टिकोण के अलावा प्रयोजन की उपयुक्तता भी प्रतिबिम्बित होती है।

*ग्रंथालय में भी रखा गया। देखिए संख्या एल०टी० 1918/2005

[डा० मनमोहन सिंह]

भारत-चीन सीमा प्रश्न के हल के लिए राजनीतिक मापदंड *तथा मार्गदर्शी सिद्धांतों पर हुआ करार इस दौरे की एक प्रमुख उपलब्धि रही। करार की एक प्रति माननीय सदन के पटल पर रखी* गई है। सीमा प्रश्न पर भारत और चीन के विशेष प्रतिनिधियों के बीच हुए विचार-विमर्शों के फलस्वरूप ही यह समझौता संभव हो पाया है। विशेष प्रतिनिधियों की यह संस्था मेरे सम्मानीय पूर्ववर्ती प्रधानमंत्री की जून, 2003 में हुई चीन यात्रा के समय बनाई गई थी। सीमा प्रश्न के हल की दिशा में यह करार सचमुच एक बड़ी उपलब्धि है। इससे दोनों देशों के ''समग्र और दीर्घकालिक हितों'' के संदर्भ में सीमा प्रश्न का एक ''राजनीतिक हल'' निकल सकेगा। दोनों पक्ष इस बात पर सहमत हुए हैं कि एक ''स्ट्रेटेजिक उद्देश्य'' के रूप में सीमा प्रश्न के शीघ्र समाधान की दिशा में आगे बढ़ना चाहिए।

करार में पहली बार भारत-चीन सीमा प्रश्न के समग्र हल के सिद्धांतों को निर्दिष्ट किया गया है। यद्यपि यह समझौता बड़े महत्व का है, फिर भी, हम मानते हैं कि हम सीमा प्रश्न के अंतिम हल से अभी भी काफी दूर हैं।

हम इस बात पर सहमत हुए हैं कि इसी बीच दोनों पक्ष वास्तविक नियंत्रण रेखा का पूरी तरह सम्मान करेंगे और उसका पालन करेंगे, सीमावर्ती क्षेत्रों में शान्ति और अमन-चैन बनाए रखेंगे तथा वास्तविक नियंत्रण रेखा के स्पष्टीकरण तथा पुष्टिकरण के कार्य में तेजी लाएंगे। चीन के प्रधानमंत्री के दौरे के समय सीमावर्ती क्षेत्रों में सैन्य क्षेत्र में, विश्वास बढ़ाने के उपायों को अमल में लाने के तौर-तरीकों के संबंध में जिस प्रोटोकाल पर हस्ताक्षर किए गए, उससे वास्तविक नियंत्रण रेखा के आस-पास शांति बनाए रखने में मदद मिलेगी।

प्रधानमंत्री श्री वेन के साथ हुई मेरी बैठक के दौरान उन्होंने बताया कि चीन, सिक्किम को ''भारत का अभिन्न अंग'' मानता है, और सिक्किम अब भारत-चीन संबंधों में कोई मुद्दा नहीं रह गया है। जिस संयुक्त वक्तव्य पर हमने हस्ताक्षर किए उसमें ''भारत गणतंत्र का सिक्किम राज्य'' स्पष्ट रूप से बताया गया है। चीन की तरफ से आधिकारिक तौर पर जो संशोधित मानचित्र हमें सौंपा गया, उसमें सिक्किम को भारत की अंतरराष्ट्रीय सीमाओं के भीतर दर्शाया गया है।

दौरे के समय जो समझौते हुए उनसे संबंधों के आर्थिक पहलू, जिसे दोनों देश बहुत महत्व दे रहे हैं को भी काफी अधिक बढ़ावा मिलेगा। द्विपक्षीय व्यापार तेजी से बढ़ रहा है और यह पिछले वर्ष 13 बिलियन अमरीकी डॉलर के अंक को पार कर चुका है। सन् 2008 तक 20 बिलियन अमरीकी डॉलर के लक्ष्य की परिकल्पना की गई है। अध्यक्ष महोदय, प्रधानमंत्री श्री वेन के साथ हुई मेरी बैठक के दौरान हम इस बात पर सहमत हुए कि वस्तुओं और सेवाओं के व्यापार को सरल बनाने और उसका विस्तार करने, निवेश के बहाव और आर्थिक सहयोग के अन्य क्षेत्रों पर निगरानी रखने के लिए एक भारत-चीन संयुक्त आर्थिक दल गठित किया जाए जिसकी सह-अध्यक्षता दोनों देशों के वाणिज्य मंत्रियों द्वारा की जाए। प्रधानमंत्री श्री वेन और मैं एक संयुक्त कार्यदल गठित करने पर भी सहमत हुए ताकि *व्यापार व्यवस्था की व्यवहार्यता और लाभों का पता लगाया जा सके।*

चीन के प्रधानमंत्री और मैंने क्षेत्रीय तथा बहु-पक्षीय मुद्दों पर विचारों का लाभप्रद आदान-प्रदान भी किया। अन्य बातों के साथ-साथ, हम संयुक्त राष्ट्र प्रणाली में व्यापक सुधार लाने के महत्व पर भी सहमत हुए। चीन ने बताया कि वह अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में भारत की स्थिति को बहुत महत्व देता है और संयुक्त राष्ट्र तथा अन्तर्राष्ट्रीय मामलों में सक्रिय भूमिका अदा करने की भारत की इच्छा को समझता है और उसका समर्थन करता है।

महोदय, मुझे विश्वास है कि चीन के प्रधानमंत्री की भारत यात्रा से भारत-चीन संबंधों के चहुंमुखी विकास में काफी तेजी आयेगी। चीन के प्रति हमारी नीति में एक निरन्तरता और आम राय रही है।

*महोदय, अब मैं पाकिस्तान के राष्ट्रपति की यात्रा की बात करता हूं *(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय :** कृपया उनके भाषण में व्यवधान न डालें।

*(व्यवधान)*

**श्री तापिर गाव** (अरुणाचल पूर्व) : प्रधानमंत्री ने अपने भाषण के दौरान चीन के अरुणाचल पर दावे के बारे में कुछ भी नहीं कहा। *(व्यवधान)* आज, अरुणाचल भारत सरकार के विचार के बारे में स्पष्टीकरण चाहता है।

**अध्यक्ष महोदय :** परन्तु आपने यह मुद्दा पहली बार नहीं उठाया है। माननीय सदस्य मैंने प्रश्न काल के दौरान भी आपको अनुमति दी थी। मुझे विश्वास है कि माननीय प्रधान मंत्री उचित समय पर इस पर विचार करेंगे।

*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय :** और कुछ भी कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित न किया जाए।

*(व्यवधान)**

**अध्यक्ष महोदय :** मैंने आपको भी अनुमति दी है।

*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय :** इसे कार्यवाही वृत्तांत में सम्मिलित नहीं किया जाए।

*(व्यवधान)**

*कार्यवाही वृत्तान्त में सम्मिलित नहीं किया गया।

*[हिन्दी]*

**प्रो० विजय कुमार मल्होत्रा** (दक्षिण दिल्ली) : अध्यक्ष महोदय, यह अरुणाचल का बहुत गम्भीर मामला है। इसलिए माननीय सदस्य प्रधानमंत्री का ध्यान उस तरफ आकर्षित करना चाहते हैं। *(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय** : मैं आपसे विनम्रता पूर्वक अनुरोध कर रहा हूं। मैं जानता हूं। मैं जानता हूं कि माननीय सदस्य द्वारा इतना महत्वपूर्ण मामला उठाया गया है। प्रधान मंत्री महोदय यहां हैं। इन्होंने इनकी बात सुन ली है। मैंने उन्हें प्रश्न काल के दौरान भी अनुमति दी थी। मैं महत्व को कम नहीं कर रहा हूं किन्तु माननीय प्रधान मंत्री को वक्तव्य देते हुए व्यवधान उत्पन्न न करें।

*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय** : ठीक है। आपने इस पर चर्चा कर ली है। आप हमेशा इस पर चर्चा कर सकते हैं। कृपया सहयोग कीजिए। यदि आप व्यवधान उत्पन्न करते रहेंगे तो यह अच्छा नहीं लगता।

*(व्यवधान)*

**श्री तापिर गाव** : यह अरुणाचल प्रदेश के लोगों की आवाज है *(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय** : मैं आपसे अनुरोध कर रहा हूं। मैं आखिरी बार बैठने का अनुरोध कर रहा हूं।

*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय** : मैं आपसे आखिरी बार बैठने का अनुरोध कर रहा हूं। मुझे कुछ करने के लिए बाध्य मत कीजिए। आपने अपनी बात कह दी है।

*(व्यवधान)*

**अध्यक्ष महोदय** : आपने अपनी बात कह दी है। आप उन्हें बाधा नहीं पहुंचा सकते। आपने अपनी बात कह दी है और मैं इसे कम करके नहीं आंक रहा हूं। फिर, आप बाधा क्यों पहुंचा रहे हैं। मैंने कई बार यह कहा है। मैं आपकी भावनाओं का सम्मान करता हूं।

**डा० मनमोहन सिंह** : माननीय अध्यक्ष महोदय, पाकिस्तान के राष्ट्रपति जनरल परवेज मुशर्रफ ने 16 से 18 अप्रैल 2005 तक भारत की यात्रा की थी। मैंने उन्हें नई दिल्ली में क्रिकेट मैच देखने के लिए आमंत्रित किया था और हमने द्विपक्षीय मुद्दों पर व्यापक वार्ता करने के लिए उनकी यहां उपस्थिति का उपयोग किया था। हमने एक संयुक्त वक्तव्य भी जारी किया था जिसमें हमारे संबंधों का जिक्र किया गया है। हमारे द्विपक्षीय संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए जिन विचारों और क्रियाकलापों पर सहमति हुई, उनकी भूमिका भी उसमें प्रस्तुत की गई थी। संयुक्त वक्तव्य की एक प्रति सभा पटल पर रख दी गई है।

महोदय, हमारी बातचीत के दौरान राष्ट्रपति मुशर्रफ और मैंने अपने द्विपक्षीय संबंधों में हुई प्रगति की समीक्षा की। हमने विश्वास पैदा करने वाले उपायों, जनता के आपसी सम्पर्क और बातचीत के क्षेत्रों में वृद्धि करके की गई प्रगति का सकारात्मक मूल्यांकन किया और पहले से प्राप्त गति को बढ़ाने के लिए अपना साक्ष्य संकल्प व्यक्त किया। बढ़े हुए द्विपक्षीय आर्थिक और वाणिज्यिक सहयोग को हम कितना महत्व देते हैं इससे भी मैंने राष्ट्रपति मुशर्रफ को अवगत कराया। मैंने गैस पाइपलाइन सहित व्यापार और परिवहन के लाभकारी सम्पर्कों में वृद्धि करने की आवश्यकता पर भी जोर दिया। हम इस बात पर सहमत थे कि दक्षिण एशिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच आर्थिक सहयोग से दोनों देशों के लोगों को भलाई ही नहीं होगी बल्कि इससे सम्पूर्ण क्षेत्र में समृद्धि होगी।

हमने दोनों देशों के बीच आपसी समक्ष को बढ़ाने के लिए अनेक उपाय करने पर भी सहमत हुए जिनमें खोखरापार-मुनाबाओ के बीच रेल सम्पर्क की बहाली भी शामिल है। संयुक्त वक्तव्य में इन दोनों का उल्लेख है।

इस माह के प्रारम्भ में हमने आतंकवादी धमकियों और श्रीनगर पर्यटक स्वागत केंद्र पर भयानक आत्मघाती हमले के बावजूद भी श्रीनगर-मुजफ्फराबाद बस सेवा शुरू की थी। हमारे लोगों का साहस और निश्चय और इस महत्वपूर्ण पहल को बाधित करने की कोशिश की हमारी दोनों सरकारों द्वारा निंदा, जैसा कि संयुक्त वक्तव्य में निहित है, हमें भविष्य में और अधिक तेजी से सफल कार्यवाही करने के लिए भरोसा देती है *(व्यवधान)* मुझे भरोसा है कि बस सेवा ने जनता का जनता से सम्पर्क, विशेषकर नियंत्रण रेखा के दोनों ओर रहने वाली जनता के बीच वर्षों की भावनाओं को प्रकट किया है *(व्यवधान)*

जम्मू और कश्मीर के मुद्दे पर भी सकारात्मक चर्चा हुई थी। मैंने इस बात पर जोर दिया कि यद्यपि सीमाओं का पुनः निर्धारण संभव नहीं है तथापि सभी उपाय जो दोनों तरफ के लोगों को साथ ला सकें, जिसमें सीमा और नियंत्रण रेखा के पार लोगों तथा व्यापार का आवागमन सुगम बनाने के लिए बढ़े हुए परिवहन सम्पर्क भी शामिल हैं, प्रक्रिया में मदद करेंगे और आपसी विश्वास का वातावरण पैदा करेंगे। राष्ट्रपति मुशर्रफ और मैं इमानदारी, उद्देश्यपूर्ण तथा भविष्यगामी तरीके से अपनी चर्चा जारी रखने पर सहमत हुए। हम प्रक्रिया को आगे बढ़ाने और शांति का लाभ दोनों देशों के लोगों, विशेषकर जम्मू और कश्मीर के लोगों को पहुंचाने के लिए मिलकर कार्य करने पर सहमत थे।

[डा० मनमोहन सिंह]

राष्ट्रपति मुशर्रफ ने जम्मू और कश्मीर का मुद्दा हल करने को महत्व दिया। तथापि, वह इस पर भी सहमत थे कि दोनों देशों के बीच विश्वास बहाल करने में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। हम दोनों ने महसूस किया था कि इस प्रक्रिया से हमारे दोनों देशों में विश्वास और सूझ-बूझ की आम धारणा को बढ़ावा देने के लिए मदद मिलेगी, जो सभी प्रमुख मुद्दों ने न्यायोचित, उचित और आपस में स्वीकार्य समाधान के लिए वातावरण पैदा करने में सहायक होगा। परिणामस्वरूप हमने नियंत्रण रेखा के पार सम्पर्क और सहयोग को बढ़ाने के लिए आगे उपाय करने पर सहमति व्यक्त की, जिसमें विभाजित परिवारों, व्यापार, तीर्थस्थानों और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के लिए बैठक के स्थानों पर सहमति भी शामिल थी।

संयुक्त वक्तव्य में स्पष्ट रूप में 6 जनवरी, 2004 के संयुक्त प्रेस वक्तव्य और 24 सितम्बर, 2004 को न्यूयार्क में भारतीय प्रधान मंत्री और पाकिस्तानी राष्ट्रपति की बैठक के पश्चात जारी संयुक्त वक्तव्य में किए गए वायदों की पुन: पुष्टि की गई है। इस पुष्टि में सीमा पार से आतंकवाद संबंधी हमारी चिंताओं का उल्लेख किया गया है। संयुक्त वक्तव्य में एक प्रतिज्ञा भी है कि आतंकवाद को शांति प्रक्रिया में बाधक नहीं बनने दिया जाएगा। इसमें शांति प्रक्रिया के महत्व और दोनों देशों के बीच संबंधों में सुधार को भी रेखांकित किया गया है।

जहां मैं यात्रा के दौरान हमारी बातचीत में हुई प्रगति से संतुष्ट हूं वहीं हमें आगे आने वाली कठिनाइयों के प्रति सचेत रहना चाहिए। मुश्किल मुद्दे जिन पर हमारे मतभेद हैं, जिनसे भारत और पाकिस्तान के बीच लम्बे समय से संबंध खराब रहे हैं, जिनके कारण का तुरंत समाधान की आशा नहीं है। अतिवादी शक्तियों और आतंकवादी संगठनों से शांति प्रक्रिया को खतरा समाप्त नहीं हुआ है। इसलिए, मैंने राष्ट्रपति मुशर्रफ को बताया कि गम्भीर और निरंतर बातचीत की प्रक्रिया विश्वास और भरोसे का वातारण जो कि हिंसा, और आतंक से मुक्त हो तैयार करने पर निर्भर है। हम पाकिस्तान से अपेक्षा करते हैं कि वह अपने वायदों का इमानदारी से पालन करेगा।

महोदय, जैसा कि माननीय सदस्यों को पता है कि पिछले वर्ष पाकिस्तान के साथ हमारे संबंधों के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है। दोनों देशों ने व्यापक बातचीत का एक दौर सफलतापूर्वक पूरा किया है और पहले ही बातचीत का अगला दौर शुरू कर दिया है। राजनयिक और अन्य संबंध सामान्य बना दिए गए हैं और 13 दिसम्बर, 2001 से पहले के स्तर पर बहाल कर दिए गए हैं। हम सिलसिले में बड़ी संख्या में जनता का आपस में सम्पर्क हो रहा है। अंतरराष्ट्रीय सीमा, नियंत्रण रेखा और सियाचिन में वास्तविक भूमि स्थिति रेखा पर लागू युद्धविराम, कुछ छिटपुट घटनाओं को छोड़कर, नवम्बर, 2003 से चल रहा है।

महोदय, भारत पाकिस्तान के साथ शांति और मित्रता के प्रति वचनबद्ध है। हम इमानदारी से पाकिस्तान के साथ सहयोगपूर्ण और रचनात्मक संबंध चाहते हैं। मुझे यह देखकर हर्ष हुआ कि पाकिस्तान की तरह से भी इस इच्छा का सम्मान किया जा रहा है और दोनों देशों में अच्छे संबंधों के लिए व्यापक जन समर्थन प्राप्त हो रहा है। ऐसे टिकाऊ और रचनात्मक संबंध बनाने के लिए हमें मेल-जोल ओर विश्वास बहाली की चल रही प्रक्रिया को आगे बढ़ाने और यह सुनिश्चित करने की जरूरत है कि हाल की सकारात्मक प्रवृत्ति बनी रहे। हमने शुरू हुई व्यापक बातचीत के दौर का कार्यक्रम और कार्यसूची तैयार की है। महोदय, हम मानते हैं कि निरंतर और उद्देश्यपूर्ण मेल मिलाप हमें शांति का मार्ग दिखाएगा और हम अपने लागों से किए गए मित्रता और सहयोग के वायदे को पूरा कर सकेंगे।

---

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय :** क्या मैं सभापटल पर रखे गए पत्र संबंधी मद को ले सकता हूं?

*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री मोहन रावले** (मुम्बई दक्षिण-मध्य) : महोदय, हिन्दुस्तान का झंडा उल्टा लगाया गया था, लेकिन पाकिस्तान का झंडा सीधा था। *(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय :** मैं आपको अनुमति दूंगा। मैंने वादा किया है।

*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री अनंत गंगाराम गीते** (रत्नागिरि) : जो भी वास्तविकता है, उसे सदन के सामने रखा जाना चाहिए। *(व्यवधान)*

*[अनुवाद]*

**अध्यक्ष महोदय :** श्री गीते, मैंने वादा किया है। मैं आपको उचित समय पर अनुमति दूंगा।

*(व्यवधान)*

*[हिन्दी]*

**श्री मोहन रावले :** वह विमान पाकिस्तान से निकला था और पूरा मंत्रिमंडल वहां पर मौजूद था। जो अधिकारी आए थे, उन्हें यह मालूम था। यह जानबूझकर किया गया था। *(व्यवधान)*